Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 28/January/2026 **IJRAW:** 2026; 5(3):162-167 **Accepted:** 05/March/2026

राजप्रशस्ति का ऐतिहासिक महत्व एवं स्त्रोत के रूप में उसका विश्लेषण

***[1]डॉ. ललिता राठौड**

*[1]सहायक आचार्या, इतिहास विभाग, भूपाल नोबल्स स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, राजसमन्द, राजस्थान, भारत।

सारांश

राजप्रशस्ति राजस्थान के इतिहास का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्त्रोत मानी जाती है। यह शिलालेख मेवाड के महाराणा राजसिंह के शासन काल की राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थियों का वर्णन करता है। राजप्रशस्ति की रचना रणछोड भट्ट द्वारा संस्कृत भाषा में की गई थी।

ऐतिहासिक स्रोत के रूप में राजप्रशस्ति मेवाड़ के शासकों की वंशावली, उनके युद्धो धार्मिक नीतियो तथा प्रशासनिक कार्यों की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। इसके माध्यम से उस समय की संस्कृति समाज और धार्मिक आस्थाओं का भी जानकारी प्राप्त होता है।

यह भारत का सबसे बड़ा और सबसे लम्बा शिलालेख है, और राजसमन्द झील में नौ चौकियों के 25 स्तंभों के काले पत्थरों पर उकेरा गया। इसमें राजसमन्द झील का निर्माण अकाल राहत कार्यों के रूप मे किये जाने का वर्णन है।

प्रशस्ति में बापा रावल से लेकर राजसिंह तक मेवाड शासकों की ऐतिहासिह उपलाब्धिया राजसमन्द झील और बांध से जुड़े निर्माण कार्य, माप और लागत के विवरण के साथ–साथ किए गए अनुष्ठानों और अभिषेक समारोट पर चारणों और ब्राह्मणों को दान दिए जाने का विवरण प्रदान करता है यह काव्य 24 अध्यायों में विभाजित 1,106 संस्कृत श्लोकों से बना है।

मुख्य शब्दः राजप्रशस्ति, शिलालेख, राजसिंह, दान, वशांवली, युद्ध, निर्माण।

प्रस्तावना

राजस्थान के राजसमन्द जिले में स्थित राजसमन्द झील राजसमुद्र राजस्थान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर के रूप में प्रसिद्ध है। इस झीलका निर्माण मेवाड़ के शासक महाराणा राजसिंह द्वारा करवाया गया था। यह झील न केवल राजस्थान, बल्कि सम्पूर्ण भारत की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण उदाहरण मानी जाती है। राजसमन्द झील के निर्माण के कारण ही इस क्षेत्र का नाम 'राजसमन्द' पड़ा। प्रशासनिक दृष्टि से राजसमन्द जिला 10 अप्रैल 1991 को राजस्थान के नवगठित जिलों में सम्मिलित किया गया। इससे पूर्व यह क्षेत्र उदयपुर जिले का भाग था। राजसमन्द अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक विशेषताओं प्राकृतिक संसाधनों, धार्मिक महत्व तथा समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के कारण विशेष पहचान रखता है। यहाँ की ऐतिहासिक धरोहरे और अभिलेख राजस्थान के इतिहास लेखन के महत्वपूर्ण स्त्रोत है। [1]

राजप्रशस्ति की स्थापना

महाराणा राजसिंह ने 'राजसमुद्र' नामक विशाल कृत्रिम झील निर्माण 1 जनवरी 1662 ईस्वी से 20 जनवरी 1676 ईस्वी के मध्य करवाया। इस झील के तट पर उत्कीर्ण शिलालेख जिसे सामूहिक रूप से 'राजप्रशस्ति' कहा जाता है। मेवाड के इतिहास, प्रशासन, सामजिक व्यवस्था तथा समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान में करते हें। राजप्रशस्ति संसार के सबसे विशाल शिला प्रशस्ति के रूप में भारतीय संस्कृती की अमूल्य कृतिप निधी है राजप्रशास्त को संस्कृत भाषा मे रचित किया गया तथा इसे शिलाओं पर उत्कीर्ण कर स्थायि ऐतिहासिक अभिलेख के रूप में स्थापित किया गया। यह अभिलेख न केवल महाराणा राजसिंह की उपलब्धियों का वर्णन करता है, बल्कि उस समय की

***Corresponding Author:** डॉ. ललिता राठौड

ऐतिहासिक घाटनाओं का प्रमाणिक स्त्रोत माना जाता है।

राजप्रशस्तिः निर्माण संरचना एव ऐतिहासिक महत्व

गोमती नदी के तीव्र प्रवाह को नियंत्रित करने तथा जल संरक्षण की दृष्टि से झीलके किनारे एक सुदृढ़ बाँध (सेतू) का निर्माण कराया गया, जिसे नौ चौकी का के नाम से जाना जाता है।

राजसमन्द झील के निर्माण कार्य मे लगभग 51 लाख 72 हजार 233रु० चार आने का खर्च हुआ।

जो उस समय की विशाल आर्थिक एवं प्रशासनिक क्षमता को दर्शाता है। नौ चौकी के तट पर प्रसिद्ध राजप्रशस्ति महाकाव्य का शिलालेख स्थापित किया गया। यह अभिलेख 25 विशाल श्याम रंग की शिलाओं (पट्टों) पर उत्कीर्ण किया गया। [3]

इन शिलाओ का आकार लगभग 3X2$^{1}/_{2}$ फीट है तथा इन पर संस्कृत भाशा में पघ शैली में लेख अंकित है। शिलालेख की यह श्रृखंला भारतीय अभिलेखीय परपंरा का अद्वितीय उदाहरण मानी जाती है।राजप्रशस्ति की रचना रणछोड़ भट्ट (तैलगं ब्राहाण) द्वारा महाराणा राजसिंह के आदेशानुसार विक्रम संवत 1732 माध शुक्ल 15 (1675 ईस्वी सन) को लिखा गया। यधपि इसकी रचना महाराणा राजसिंह के जीवन काल मे पूर्ण हुई, किन्तु इसे शिलाओं पर उत्कीर्ण कराने का कार्य उनके उत्तराधि–कारी महाराणा जयसिंह के आदेश से सम्पन हुआ। [5]

'राजप्रशस्ति का ऐतिहासिक महत्व'

राजप्रशस्ति महाकाव्य केवल साहित्यिक कृति ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्त्रोत भी है। इसमें मेवाड़ के शासकों की वंशावली, प्रशासनिक व्यवस्था सामाजिक जीवन, धार्मिक स्थिती वैवाहिक सम्बंध, यह नीतिया तथा समकालीन राजनीतिक परिस्थियों विस्तृत वर्णन किया गया है।

राजप्रशस्ति के सर्गों का संक्षिप्त विवेचन

प्रस्तुत शोध पत्र में राजप्रशस्ति ग्रंथ. के विभिन्न सर्गो का विश्लेषण करते हुए यह स्पस्ट किया गया है कि प्रत्येक सर्ग इतिहास लेखन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यधपि राजप्रशस्ति महाकाव्य का मुख्य विषय महाराणा राजसिहं का जीवन चरित्र है। परन्त् प्रथम पॉच सर्गो मे मेवाड के प्राचीन इतिहास वंशो, पर प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक सर्ग ईश्वर–स्तुति वन्दना के साथ प्रारंभ होता है।

प्रथम सर्ग

प्रथम सर्ग में कुल 39 श्लोक है। इस सर्ग का आरम्भ ईश्वर – स्तुति वन्दना से किया गया है। जो संस्कृत काव्य परम्परा के अनुरुप है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसमें महाराणा राजसींह द्वारा राजसमन्द झील के निर्माण तथा उससे संबंधित राजप्रशस्ति की रचना की पृष्ठभूमि का वर्णन मिलता है। इस सर्ग मे शासक की कीर्ति धार्मिक आस्था तथा लोककल्याण कार्यों का उल्लेख मुख रूप से किया गया है। [7]

द्वितीय सर्ग

द्वितीय सर्ग में 38 श्लोक संकलित है। इस सर्ग का प्रारम्भ भी ईश्वर–स्तुति से होता है। इसमें सृष्टि–तत्व तथा मेवाड के शासकों की वंशावली का वर्णन प्रस्तुत किया है। राजवंश की परम्परा एवं ऐतिहासिक निरन्तरता को स्थापित करने का प्रयास सर्ग की प्रमुख विशेषता है।

तृतीय सर्ग

तृतीय सर्ग में 36 श्लोको का समावेश है। इस सर्ग के प्रारम्भ मे मेवाड गुहिल वशं के महाराणाओं की वंशावली दी गई है। बप्पा रावल एवं हारीत ऋषि के सम्बन्धों की जानकारी, बप्पा रावल के बाद के मेवाड उत्तराधिकारी की जानकरी दी गई।

चतुर्थ सर्ग

चतुर्थ सर्ग में लगभग 40 श्लोको का समावेश है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह सर्ग अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें राणा रत्नसिंह एवं अलाउद्दीन खिलजी के मध्य हुए संधर्ष का वर्णन किया गया है। सन् 1303 ईस्वी में चितोड़ पर अलाउदीन खिलजी के आक्रमण तथा उसके परिणामों का विस्तारपूर्वक उल्ललेख मिलता है। इस सर्ग मे चितौड के नाम परिवर्तन, युद की परिस्थितियों तथा उसके प्रभावो भी वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त, स्थानीय परंपराओं एवं धार्मिक आस्थाओं का उल्लेख करते हुए क्षेत्रीय देवी–देवताओं की स्थापना और उनके प्रति जनसमुदाय की श्रद्धा का चित्रण किया गया। अतः मे महाराणा प्रताप व शक्ति सिंह के प्रेम मिलाव, प्रताप के संधर्षशीलता तथा उनके जीवन प्रसँगो का वर्णन करते हुए मेवाड़ की गोरवगाथा को प्रस्तुत किया गया है।

पाचॅवा सर्ग

पांचवे सर्ग में मेवाड – मुगल सन्धि का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया, इसमें महाराणा अमरसिंह एवं जहाँगीर के मध्य सम्पन सन्धि तक घटित विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं का कमबह विवरण मिलाता है।इस सर्ग में राजनीतिक परिस्थितियों युद्धों तथा कुटनीतिक प्रयासों का विश्लेषण किया गया है। जिनके परिणामस्वरूप दोनो पक्षो के मध्य समझोता स्थापित हुआ। साथ ही, इस प्रसंग में तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों का भी उल्लेख किया गया है, [8]

छठा सर्ग

राजसमुद्र झील के निर्माण कार्य का आरंभ अकाल एवं पीड़ित जनता सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया। इस सर्ग में महाराणा राजसिंह की विभिन्न उपलब्धियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। जिसमें उनके धार्मिक, सामाजिक, प्रशासनिक तथा जनकल्याण कारी कार्यों का विशेष उल्लेख है।

प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि राजसमुद्र तालाब की प्रतिष्ठा के अवसर पर लगभग 46000 ब्राह्मणो एवं अन्य लोगो की

उपस्थिति रही। इस विशाल निर्माण कार्य पर महाराणा द्वारा लगभग 1,05,07,608 रुपये व्यय किए गए, जो उस समय आर्थिक एवं सांस्कृतिक समृद्धि का घोतक है।

सांतवा सर्ग

सांतवे सर्ग में राजसिंह की प्रान्तीय विजय अभियानों की जानकारी प्राप्त होती है। जिसमें अजमेर, टोंक, लालसेट, सांभर, शाहजपुर आदि। साथ ही राजसमुद्र झीला की नौंकियों की सफेद प्रत्थर भर छतरियों की विविध दृश्यो की शिल्पकारी दर्शक के मन को मोह लेती है। आज से लगभग सवा तीन सौ वर्ष पहले की यह स्थापत्य कला शिल्पियों का आश्चर्य में डाल देने वाली है। बेलबुटो की विभिन्न शैली, नानाविध पक्षियो और पशुओ मानवों की कीडा – विहार चेष्टाएँ कला के साथ रस की उत्पति कर मन मे उमंग भर देती है। [9]

आठवा सर्ग

अष्टम सर्ग में कुल 54 श्लोको का वर्णन प्राप्त होता है। इस सर्ग में महाराणा राजसिंह के शासनकाल के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का उल्लेख किया गया है। इसमे औरंगजेब के समय की परिस्थितियों तथा राजसत्ता से संबंधित धटनाओ का विवरण मिलता है। साथ ही महाराणा द्वारा औरंगजेब की नीतियो के प्रति अपनाए गए दृश्टिकोण एवं उनके प्रशासनिक निर्णयों का भी वर्णन किया गया है।

इस सर्ग में राजकीय गतिविधियों, सैन्य संगठन तथा प्रशासनिक व्यवस्था से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त, तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक संबंधों एवं संधर्शो का भी उल्लेख किया गया है जिससे उस काल की ऐतिहासिक परिस्थितियों का स्पष्ट बोध होता। [10]

नवम सर्ग

नवम सर्ग में कुल 48 श्लोक सम्मिलित है। इस सर्ग का मुख्य विषय राजसमूद्र (राजसमंद) के निर्माण का विस्तृत वर्णन है। महाराणा राजसिंह द्वारा जनकल्याण एवं जला–संरक्षण के उद्देश्य से इस विशाल सरोवर के निर्माण कार्य का आरम्भ कराया गया।

निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के लिए संवत् 1718 माध शुक्ल सप्तमी बुधवार के शुभ मुहुर्त का उल्लेख किया गया है। इस अवसर पर वैदिक विधि विधान धार्मिक अनुष्ठानों तथा सामाजिक सहभागिता का भी वर्णन मिलता हैं।

सवत् 1721 वैशाख शुक्ल त्रयोदशी को निर्माण कार्य पूर्ण होने का उल्लेख मिलता है। इस सर्ग में राजसमंद के निर्माण का लोकहितकारी कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसने सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को नई दिशाप्रदान की।

दसवाँ सर्ग

इसमे 43 श्लोक है। पहले श्लोक में द्वारकानाथ की स्तुति है। विक्रम संवत् 1726 वैशाख शुक्ल 13 के दिन सेतु का निर्माण मुहुर्त किया। सेतु हेतु महादान दिया। जिसमें महाभूतघट सौ पल सोने से बना था, हिरण्याश्वरय एक हजार मूल का था। इन दोनो में 11670 – रुपये व्यय हुए। साथ ही महाराणा राजसिंह राजमन्दिर नामक एक राजप्रासाद भी बनवाया। इसी समय महाराणा के आदेश से रणछोड भट्ट ने एक प्रशस्ति की रचना की, जिसे बाद में शिलाओं पर खुदवाया गया, 'राजप्रशप्ति'

ग्यारवा सर्ग

इस सर्ग में 57 श्लोक है। जिनमें राजसमुद्र के सेतुओं का पूरा वर्णन दिया गया। उनकी लम्बाई, चौडाई, प्रत्थरों का प्रयोग, नक्काशी मण्डप निर्माण, इत्यादि सेतु का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया है।

मुख्य सेतु, निम्बसेड, भद्रसेतु कांकरोली का सेतु, सेतु, आसोटीया ग्राम के पार्श्व में बना सेतु. बॉसोल ग्राम के पार्श्व में बना सेतु. इत्यादि।

बाहरवॉ सर्ग

सेतुओं के निर्माण एवं राजसमन्द झीलकी सीमाओं की पूरी जानकारी दी गई है। [11]

तेरहवॉ सर्ग

इसमें राजसमन्द झील के निर्माण के पूर्ण होने के बाद उसकी प्रतिष्ठा के अवसर पर भव्य समारोह का आयोजन रखा गया, इस अवसर पर राजाओ दुर्गपतियों, संबंधी, इत्यादि को निमंत्रण भेजा गया। पूरा नगर हाथीयो, रथो, पालकियों, उपहार, भेंट, इत्यादि से भर गया। महाराणा ने राजसमुद्र के सेतु पर तीन मडंप तैयार करने का आदेश दिया। एक मण्डप सरोवर के प्रतिष्ठा के निर्मित तथा शेष दो मण्डप तुलादान के लिए बनाये गये। जलाशय की प्रतिष्ठा का मुहुर्त संवत् 1732 माध शुक्ला 10 शनिवार को रखा गया।

चौहदवा सर्ग

इस सर्ग में महाराणा राजसिंह की धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों का वर्णन प्राप्त होता है। जिसमें राजपरिवार तथा सामतो हारा धार्मिक अनुष्ठानों, तुलादान एवं मन्दिर निर्माण की परंपरा का उल्लेख मिलता है। शासको व सामंतो ने स्वर्ण रजत तुलादान एवं मंडल निर्माण जैसे कार्य संपन्न कराए।

अतः यह सर्ग राजसिंह कालीन धार्मिक नीतियों सामाजिक एवं दान. संस्कृति हेतु महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारी प्रस्तुत करता है। [12]

पद्रहवां सर्ग

इस सर्ग में महाराणा राजसिंह और उनके परिवार सामन्तों कुलीनों द्वारा किए गए तुलादान और धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन किया गया है। सोने और चांदी के तुलादान के लिए मंडपो का र्निमाण कराया गया और राजनगर से वार्षिक प्रतिष्ठों का आयोजन हुआ। इस अवसर पर राजासींह ने पुरोहितों और बाह्मणो के साथ धार्मिक पूजा

अर्चना की। समारोह के अंत में महाराणा ने पुरोहित गरीबदास और अन्य बाह्मणो को वस्त्र आभूषण चांदी के पात्र और अन्य उपहार देकर दक्षिणा प्रदान की। यह सर्ग 31 श्लोको में पूरा हुआ।

सोलवॉ सर्ग

इसमे महाराणा राजसिंह ने संवत 1632 में वैशाख शुल्क तृतीया के दिन राजसमुद्र की प्रतिष्ठा उन्होने धार्मिक करवाई। इस अवसर पर धार्मिक विधि. विधानों के अनुसार परिक्रमा और अन्य अनुष्ठान संपन्न कराए। समारोह के दौरान पुरोहितों और बाह्मणो की उपस्थिति में धार्मिक परंपराओं का पालन किया गया। साथ ही राजसमुद्र की परिक्रमा और दान की परंपरा भी निभाई गई।

परिकृमा के दौरान उन्होंने राजकीय वैभव का त्याग करते हुए पैदल चलकर धार्मिक परंपरा का पालन किया। मार्ग में उपस्थित लोगों ने उनका सम्मान किया। और वर्षा के बीच भी अनुष्ठान जारी रहा।परिक्रमा पूरण होने पर महाराणा ने बाह्मणों तथा अन्य लोगो को दान .दक्षिणा प्रदान की और विभिन्न देवताओं की पूजा. अर्चना कर धार्मिक कर्मकांड सम्पन्न किए। इस प्रकार यह आयोजन राजसमुद्र की धार्मिक प्रतिष्ठा और सामाजिक महत्व को दर्शाता है। इस सर्ग में 60 श्लोक है। [13]

सतहरवॉ सर्ग

राजप्रशस्ति के सतहरवो सर्ग में महाराणा राजसिंह द्वारा सम्पन्न धार्मिक एवं दान संबंधी कार्यों का वर्णन किया गया है। पूर्णिमा के अवसर पर उन्होंने अपनी पत्नी और परिवार के साथ मंडप में प्रवेश कर बाह्मणों तथा विद्वानों की उपस्थिति में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान संपन्न किए। इस दौरान अनेक क्षत्रिय ठाकुर तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

राजसिंह ने दान सत्कार की परंपरा का पालन करते हुए मंदिरों का निर्माण कराया और बाह्मणों व विद्वानो को दान प्रदान किया। इसके अतिरिक्त दान की विधि भी सम्पन की गई जिसमें सोने का दान किया गया। इस अवसर पर उन्होने अपने पुत्रों तथा परिवारजनों को भी साथ रखा और विभिन्न प्रकार की संपति जैसे ग्राम, हाथी, धोडे, पृथ्वी, आदि का दान दिया।यह सर्ग राजसिंह की धार्मिक आस्था दानशीलता और सामाजिक प्रतिष्ठा को दर्शाता है

अठारहवां सर्ग

इस सर्ग में राजसिंह द्वारा राजसमुद्र की प्रतिष्ठा के अवसर पर किए गए दान और धार्मिक कार्यों का वर्णन मिलता है। इस अवसर पर उन्होंने पुरोहित गरीबदास को बारह गावॅ दानस्वरूप प्रदान किए जिनमें धासा, गुडा, सिरथल, सोलोल, आलोद, मजकेरा, धनेरिया, अंबडेरी, साडसादडी, उसरोल, आसाना भावा आदि। इन गांवो के अतिरिक्त अन्य ग्राम और कुछ उपजाऊ भूमि भी बाह्मणों को प्रदान की गई जिससे उन्होंने आर्शीवाद प्राप्त किया। इसके पश्चात राजसिंह की पटरानी ने चांदी का तुलादान किया। जिसमें राजपरिवार के अन्य सदस्यों ने भी सहभागिता निभाई महाराणा राजसिंह ने सरोवर का नाम राजसमुद्र, पर्वत पर बने प्रासाद का नाम राजमंदिर तथा नगर का नाम राजनगर रखा। इस अवसर पर बाह्मणो, सन्यासियों तथा अन्य धार्मिक व्यक्तियों को धन परिधान आदि दानस्वरूप प्रदान किए गए।

उन्नीसवा सर्ग

इस सर्ग में 43 श्लोक है।प्रारंभ के 21 श्लोकों में मुख्य रूप से राजसमुद्र का वर्णन हे। राजसिंह ने राजनगर के बाहर गाडामंडल;हाताद्ध बनवाया जिनमें देश विदेश से हजार बाह्मणो को आमन्त्रित किया। राजासींह ने सप्तसागरदान एवं तुलादान का धन दिया। तत्पष्चात सभामंडप में उस्थित सभी मेहमानों को कीमती वस्त्र, आभूषण, हाथी, घोडे, गांवो के ताम्रपत्र प्रदान किए और उन्हें अपने घर लौटने की आज्ञा दी।

बीसवा सर्ग

महाराणा राजासिह द्वारा दानशीलता का वर्णन किया गया। इस अवसर पर बाह्मणो, साधुओं, चारणो, भाटो, अन्य विद्वानों राज्यों के शासको, जोधपुर के राजा जसवन्त सिंह राठोड, आंबेर नरेश रामसिंह कछवाहा, बीकानेर के अनूप सिंह, बूंदी नरेश भावसिंह, रामपुरा के चन्द्रावत मोहकमसिंह, इत्यादि को एक.एक हाथी दो.दो घोडे कीमती वस्त्र आभूषण भिजवाए। ये हाथी घोडे 6500 रू की कीमत के थे। [14]

इक्कीसवा सर्ग

इस सर्ग में राजसमुद्र के निर्माण तथा उससे संबंधित व्ययों का वर्णन किया गया है। इसमें बताया गया है कि राजसमुद्र के निर्माण और उसकी प्रतिष्ठा पर लगभग 15,17,22,33 रू और 4 आने का व्यय हुआ। सवंत. 1734 मे महाराणा राजासिंह ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर दो महादान कत्पद्धम और हिरण्याश्व दिए। पहले दान में दो सौ पल तथा दुसरे में सोना दान किया गया। इसी वर्ष श्रावण मास में झीलवाडा जाते समय शत्रु पीडित सिरोही के राव बैरिसाल को वहां का राव नियुक्त किया। इस सर्ग में 45 श्लोक है।

बाईसवा सर्ग

इस सर्ग में महाराणा राजसिंह व मुगल सम्राट औरंगजेब के राजनैतिक सम्बधो आपसी सधंर्ष का वर्णन किया गया। औरंगजेब की कट्ट धार्मिक नीति का वर्णन किया गया। मेवाड आकृमण देवारी धाटे एकलिंग मन्दिर इत्यादि स्थानो पर औरंगजेब ने अपनी कटर धर्मान्ध नीति का अनुसरण किया।

तेईसवॉ सर्ग

इस सर्ग में महाराणा राजासिंह और मुग़ल सेना के बीच हुए संघर्ष तथा राजनीतिक घटनाओं का वर्णन किया गया है। इसमें बताया गया है कि महाराणा ने कुंवर भीमसिंह

को सेना के साथ भेजकर दुश्मनों की नाकेबंदी करवाई और विभिन्न स्थानों पर मुग़ल सेना को पराजित किया। इन घटनाओं के कारण शत्रु पक्ष को भारी क्षति हुई और उन्हें संधि के लिए विवश होना पड़ा। परिणामस्वरूप निश्चित धनराशि और शर्तों के साथ समझौता किया गया। आगे के वर्णन में युद्ध की रणनीतियों, मार्गों की नाकेबंदी तथा विभिन्न सैन्य गतिविधियों का उल्लेख मिलता है, जिनसे उस समय की राजनीतिक और सैन्य परिस्थितियों का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत होता है।

साथ ही इस सर्ग में महाराणा राजसिंह के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं और उनके कार्यों का वर्णन किया गया है। इसमें बताया गया है कि उन्होंने अपने सहयोगियों और प्रमुख व्यक्तियों को सम्मानित किया तथा उन्हें भूमि, आभूषण और वस्त्र आदि प्रदान किए। इसके अतिरिक्त, राजकीय व्यवस्था और प्रशासनिक गतिविधियों का भी उल्लेख मिलता है। आगे के श्लोकों में महाराणा द्वारा विभिन्न स्थानों पर किए गए सैन्य अभियानों और उनकी वीरता का वर्णन किया गया है, जहाँ उन्होंने शत्रुओं को पराजित कर कई दुर्गों और नगरों पर अधिकार स्थापित किया। अंततः यह अंश महाराणा राजसिंह की वीरता, प्रशासनिक क्षमता और राज्य विस्तार की उपलब्धियों को उजागर करता है। [16]

चौबीसवाँ सर्ग

इस अंश में राजप्रशस्ति ग्रंथ की भाषा–शैली का विश्लेषण किया गया है। इसमें बताया गया है कि यद्यपि यह ग्रंथ संस्कृत भाषा में रचित है, फिर भी इसमें संस्कृत के साथ–साथ फारसी–अरबी तथा लोकभाषा के अनेक शब्दों का प्रयोग मिलता है। इससे ग्रंथ की भाषा अधिक स्वाभाविक और प्रभावपूर्ण बन गई है।

उदाहरणस्वरूप फारसी–अरबी मूल के शब्द जैसे–बुर्ज, सुलतान, दर्गह, सलाम आदि तथा लोकभाषा के शब्द जैसे–रण, बैर, राणा, चौकड़ी आदि का प्रयोग किया गया है। साथ ही कुछ ऐसे शब्द भी मिलते हैं जो उस समय प्रचलित थे। [17]

स्त्रोत के रूपा में विश्लेषण (मूल्याकन)

राजप्रशस्ति मेवाड के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अभिलेखीय स्त्रोत है जो महाराणा राजसिंह के शासनकाल में रचित प्रशस्ति साहित्य का उत्कष्ट उदाहरण माना जाता है। यह केवल शासक की उपलब्धियों का वर्णन ही नहीं करता, बल्कि तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों की भी जानकारी प्रदान करता है। प्रस्तुत शोधात्मक विश्लेषण में राजप्रशस्ति को ऐतिहासिक स्त्रोत के रूप में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

राजप्रशस्ति का राजनैतिक स्त्रोत रूपा में महत्व और भी बढ़ जाता है। क्योंकि इस प्रशस्ति मे शासको की वंशावली युद्धों, विजयो तथा प्रशासनिक कार्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है। मुगला– राजपूत संबंध, तथा क्षेत्रीय सत्ता संरचना का ज्ञान प्राप्त होता है।

सामाजिक रूप से राजप्रशस्ति में तत्कालीन समाज की संरचना, धार्मिक, आस्थाएँ, दान – परंपरा तथा लोकजीवन की झलक मिलती है। इससे समाज में ब्राह्मणों, क्षत्रियो तथा अन्य वर्गी की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से मन्दिर निर्माण, दान–पुण्य का उल्लेख मिलता है, जो उस समय की धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाता है। जो मेवाडु की सांस्कृतिक पहचान को समझने में सहायक है। हालांकि, प्रशस्ति साहित्य होने के कारण इसमे शासक की प्रशंसा की गई है। अत ऐतिहासिक तथ्यो का उपयोग करते समय समालो – चनात्मक दृश्टिकोण अपनाना आवश्यक है। इस प्रकार. राजप्रशस्ति मेवाड के इतिहास के पुनर्निर्माण मे एक विश्वसनीय व प्रमाणिक स्त्रोत के रूप मे स्थापित होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजसमन्द जिला – एक दृष्टि, अक्टूबर 2008 पृ०स० 1
2. राठोड डॉ० मोहस्बत सिंह – महाराणा राजसिंह, प्रकाशक–प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, 1513N 978. 81.9059,82.7.9, प्रथम संस्करण 2013 प्र०स० 34
3. राजसमन्द जिला – एक पूर्वोक्त, प्र०स० 32
4. शर्मा डॉ० गोपीनाथ – राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत, प्रकाशक . राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर. 978.81.7137.874.6 छठा संस्करण – 2011 पृ०स० 189
5. मेनारिया डॉ० मोतीलाल – राजप्रशस्ति महाकाव्यम् प्रकाशक– साहित्य सस्थान, राजस्थान विघापीठ उदयपुर, प्रथम सस्करण .. वि. सवंत 2030 प्रथम सर्ग, पृ०स० 5
6. शर्मा हरिशकंर, पावा डॉ० सरोज – राजान्थान का इतिहास, प्रकाशक दृ पप्लिकेशन जोरवाला जयपुर, सस्करण 2022 पृ०स 20
7. मेनारिया डॉ० मोतीलाला, पूर्वोक्त प्रथम सर्ग, पृ०स० 5–6
8. शर्मा डॉ० कालूराम, व्यास डॉ० प्रकाश – राजस्थान के इतिहास की रूपरेखा सस्करण – बारंहवा – 2016, पंचशील प्रकाशन जयपुर, पृ०स० 7
9. शास्झी पो. श्री कण्ठमणि . कॉकरोली दिग्दर्शन, प्रकाशक – विघा विभाग श्री व्दारकाधीश मन्दिर कॉकरोली (राजस्थान) प्रथम सस्करण 2004 ईस्वी, पृ०स० 5, 6
10. From wikipedia-org/wiki/Raj] Prashasti आठवा सर्ग
11. श्यामलदास कविराज – वीरविनोद, मेवाड का इतिहास, द्वितिय भाग, प्रकाशक – महाराणा मेवाड हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, सिटी पैलेस, उदयपुर, पृ०स० 448, 449
12. मेनारिया डॉ० मोतीलाल – पूर्वोक्त, पृ०स० 28,29 तेरहवा, चौहदवा सर्ग.
13. औघ गोरीशंकर हीराचंद – पूर्वोक्त, सर्ग – 15,16

प्र०स० 0573, 574
14. मेनारिया डॉ० मोतीलाल पूर्वोक्त – सर्ग 17,18,19,24 पृ०स० 31, 32
15. श्यामलदास कविराज – वीर विनोद, पूर्वोक्त – सर्ग 21, पृ०स० 473, 474, 475
16. थ्तवउ https://hi-wikipedia-org राजप्रशस्ति संस्कृत काव्य एवं शिलालेख अध्याय –22, 23,
17. तिवउ → https://hi-wikipedia-org राजप्रशस्ति अध्याय 24